सम्पादकीयम्

वेद विद्या रिसर्च जर्नल के सम्माननीय मनीषी पाठको एवं प्रिय शोधार्थियो ! आपके कर कमलों में यह अङ्क सौंपते हुए मुझे हार्दिक हर्ष है। हमने प्रयास किया है कि इस बार भी उत्तरोत्तर ज्ञानयात्रा-प्रवृत्ति-मूलक यह रिसर्च जर्नल ज्ञान एवं विद्या के क्षेत्र में दिशाबोधक बने, इस भाव से गत पाँच वर्षों से एक सचिव के रूप में सम्पादन करने के साथ-साथ सम्पादकीय लिखता रहा । सुझाव, प्रशंसा एवं मूल्याङ्कन जैसी शब्दावली से भी मुझे पाठकों का सम्बल बराबर मिलता रहा । भारत सरकार ने मुझे पाँच वर्ष सेवा करने का महत्त्वपूर्ण अवसर प्रदान किया था जनवरी २०११ में, एक-एक दिन करके पाँच वर्ष ४ जनवरी २०१६ को सफलता के साथ पूर्ण हो रहे हैं। अब मैं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रिय वेदविद्या प्रतिष्ठान के सचिव पद पर सेवा करने एवं अपने उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने के बाद प्रतिष्ठान से विदा होकर अपनी मूल सेवा संस्था वेद विभाग, गुरुकुल काङ्गड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) मैं जाकर अपनी सेवाएं पुनः प्रदान करने हेतु नूतन ऊर्जा के साथ जुट जाऊँगा।

प्रतिष्ठान में कार्य करते करते न जाने कैसे और कब 5 वर्ष बीत गये पता ही नहीं चला। लेकिन विदाई तो होनी ही है जो किसी को गम, किसी को खुशी देती है। इस अवसर पर मैं अपने सच्चे प्रशंसकों एवं महाप्रशंसकों को प्रणाम-पुरस्सर प्रथमतः धन्यवाद, आभार उस परम ब्रह्म परमात्मा के लिए जिस ने सचिव पद के गुरुतर भार का सम्यक् निर्वहन करने की आध्यात्मिक शक्ति प्रदान की। द्वितीय आभार उस वेदोद्धारक, समाजसुधारक, स्वराज्य-मन्त्र-प्रदाता, वैदिक संस्कृति व वैदिक वाङ्मय के प्रखर अग्रणी पुरोधा यतीवर महर्षि दयानन्द सरस्वती का जिनके द्वारा प्रबोधित वेद विद्या व ज्ञान ने **मन्त्रश्रुत्यं चरामसि, संश्रुतेन गमेमहि, मा श्रुतेन विराधिषि, वयं राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिताः** का दिव्य सन्देश कूट कूट कर रोम-रोम में भरा। इसी का परिणाम था कि प्रतिष्ठान के माध्यम से वेदविद्या के कार्यक्षेत्र में तथा प्रशासनिक सेवा में पक्षपात, भेदभाव, जातिवाद, प्रान्तवाद, भाषावाद आदि दुराग्रह से सदा सर्वथा दूर रहकर कर्मठता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, निर्लोता एवं दूरदर्शिता के साथ सेवा करने में सतत प्रयत्नशील हो सका। तृतीय आभार मानव संसाधन विकास मन्त्रालय भारत सरकार का, जिसने मुझे यह भारतीय प्रशासनिक सेवा का गुरुतर दायित्व सौंपकर सेवा प्रदान करने का अवसर प्रदान किया। यहाँ एक तथ्य का उल्लेख करना आवश्यक है कि मन्त्रालय की तत्कालीन माननीया संयुक्त सचिव डॉ. अनीता भटनागर जैन ने नियुक्ति के बाद मुझे बधाई देते हुए कहा था कि यह संस्था वर्तमान में निष्क्रिय एवं क्षीण हो गई है, इसे विकास, उत्थान के स्वर्णिम शिखर पर आपने लाकर प्रतिष्ठित करना है, इसके लिए आपको पूरे पाँच वर्ष निष्ठा व लगन के साथ काम करना है, मैं

उनके इन प्रेरणादायी वाक्यों की रक्षा कर सका यह मेरे लिए एक गर्व की बात है वहीं माननीय सभी पूर्व मानव संसाधान विकास मन्त्रियों एवं वर्तमान माननीय मानव संसाधान विकास मन्त्री व माननीय प्रतिष्ठान अध्यक्ष श्रीमती स्मृति ईरानी ने इसको बढ़ाने में अपना उल्लेखनीय योगदान देकर सम्बल प्रदान किया। वहीं माननीय उपाध्यक्ष प्रो. सन्निधानं सुदर्शन शर्मा ने भी समय-समय पर अपनी यथाशक्य सेवाएं प्रदान कर प्रतिष्ठान के विकास में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया है। वहीं विशेष आभार संयुक्त सचिव श्री एस.एस. सन्धु का करता हूँ जिन्होंने उदारमना होकर वेदविद्या प्रतिष्ठान के कार्यों में विशिष्ट रुचि लेकर सदा मार्ग प्रशस्त किया। मन्त्रालय के वर्तमान सभी अधिकारियों श्री आर.सीताराम मूर्ति उपसचिव, श्री पवन मेहता अवर सचिव, समस्त अधिकारियों तथा वित्त विभाग के सभी अधिकारियों का वेद विद्या प्रतिष्ठान के प्रति बहुत सहयोग रहा इनका हृदय से मैं धन्यवाद करता हूँ ।

मैंने प्रतिष्ठान की प्रशासनिक सेवा में रहते हुए बहुत कुछ सीखा तथा अपनी क्षमता से अधिक करने को सतत उद्यत रहा। इस समस्त उपलब्धि में प्रतिष्ठान के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का बहुत बड़ा योगदान रहा है। मैं प्रारम्भ से ही आम लोगों से हटकर कुछ जुनूनी रहा, चुनौतियाँ स्वीकार करने तथा वैसा ही करने की उत्सुकता, जिससे निश्चय ही इतिहास के पन्ने लिखे जाते हैं उसी जुनून में मेरे साथी प्रतिष्ठान कर्मचारियों व अधिकारियों ने पूर्णनिष्ठा के साथ सहयोग ही नहीं, बढ़चढ़कर भाग लिया, इन्हीं के सहयोग, अनुशासनात्मक अनुपालन के बदौलत गर्व के साथ कहता हूँ कि आज प्रतिष्ठान सम्पूर्ण भारत में अपने जीवनकाल के उन्नत व प्रतिष्ठित शिखर पर विराजमान है।

हृदय से प्रणामपुरस्पर वेद विद्या के सुधीजन लेखकों व पाठकों का विशेष रूप से धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने इस जर्नल को यह ऊँचाईयाँ देने में विशिष्ट योगदान प्रदान किया, वस्तुतः यह श्रेय उनकी ज्ञान साधना को है, उनकी इसी ज्ञान साधना के कारण यह रिसर्च जर्नल वेदविद्या की विविध विधाओं के क्षेत्र में अपने प्रतिमान स्थापित कर सका। जो वेद का अध्ययन करते हैं अथवा वेदविद्या या शब्द साधना में निरत रहते हुए चिन्तन करते हैं, लिखते हैं और आचरण करते हैं निश्चय ही वे वेदरूपी पुरुष के गहन व प्रौढ़ मित्र हैं। यह वेदरूपी सच्चा मित्र वेदज्ञान साधक के लिए सभी प्रकार के ज्ञान मार्ग को प्रशस्त एवं हृदयङ्गम कराता है और जो इस नित्यज्ञान की अवहेलना करता है उत वा वेद के प्रति उदासीन व अकर्मण्य है उसे वाक्तत्व (ब्रह्मतत्त्व) का अपेक्षित भाग नहीं मिलता है यहाँ तक कि सुकृत पथ का भी मार्ग अवरुद्ध हो जाता है, ऐसा वेद की **यस्तित्याज सचिविदं सखायं न तस्य वाच्यपि भागो अस्ति।यदीं शृणोत्यलकं शृणोति नहि प्रवेद सुकृतस्य पन्थाम् ॥** ऋग्वेद-१०.७१.६

इस ऋचा ने विधि एवं निषेध उभयविध विधा का उल्लेख कर दिया है। महर्षि मनु ने तो इससे बढ़कर मनुस्मृति में लिखा है कि –

योऽनधीत्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम् ।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः ॥

इसलिए सभी प्रकार के भद्राभिलाषी को सद् ज्ञान प्राप्त्यर्थ वेद के सखित्व का सुतराम लाभ लेना आवश्यक है वेद पद में प्रयुक्त एक विद्√धातु भी है जो लाभार्थ में प्रयुक्त है और यह तभी सम्भव है जब इसके रहस्यों में निमग्न होता है अर्थवित् बनता है इस तथ्य को स्वयं ऋग्वेद की

उत त्वः पश्यन्न ददर्श वाचमुत त्वः शृण्वन्न शृणोत्येनाम् ।
उतो त्वस्मै तन्वं विसस्रे जायेव पत्य उशती सुवासाः ॥ ऋग्वेद १०.७१.४

यह मन्त्र स्पष्ट रूप से सन्देशित करता है जहाँ पर उस वाक्तत्वदृष्टा के शोध एवं ज्ञान विषयक विविध आयाम बुद्धि एवं आत्मा के चर्वणीय विषय बन जाते हैं।

वाक् अथवा अक्षर को ब्रह्म ही कहा गया है जो अनन्तता का वाहक है, अनन्त में निमग्न होने का प्रारम्भिक अवगाहन मात्र वाक्तत्व ही हो सकता है। व्यक्ति में समष्टि की ओर बढ़ने की उत्कट अभिलाषा का प्राशस्तिक मार्ग मात्र वेदज्ञान में प्रवीण होना अथवा उस वेद विकास में निमज्जन या अवगाहन करना जीवन की सार्थकता है। मैं समझता हूँ उसी तथ्य या पथ की ओर चलने चलाने, बढ़ने बढ़ाने की प्रेरणा वेदज्ञानप्रसूत शब्दावली बड़ी प्रभावशाली होती है, जिसका कतिपय अंशों में समवेत प्रयास प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित यह वेदविद्या नामक रिसर्च जर्नल अहर्निश कर रहा है। इस शोध पत्रिका की शब्द श्रीवृद्धि में वेद मनीषी विद्वानों ने अपने चिन्तन स्वाध्याय के बल पर इसको संजोया है संवारा है। यद्यपि सभी विद्वानों के चिन्तन अथवा मन्तव्य अथवा लेखन मैं साहमत्य हो, यह निश्चय नहीं है, तथापि विषय मन्थन एवं शब्द चिन्तन में अनेक विकल्पात्मक धारा अवश्य प्रस्फुटित व प्रस्रवित हो जाती हैं, यही चिन्तन विशदता की ओर ले जाता है, अनन्तता अथवा समष्टि की ओर ले जाने में प्रवृत्त कराता है। अतः भाषात्रय में अवलम्बित तथा वेदज्ञान धारा से प्रभावित यह अंक भी सभी जिज्ञासु पाठकों का विद्या मार्ग प्रशस्त करने में अपनी सशक्त भूमिका निर्वहित करेगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

प्रो. रूप किशोर शास्त्री
सचिव
महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान,
(मानव संसाधन विकास मन्त्रालय, भारत सरकार)
वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण गणेश, उज्जैन